अध्याय 8

अव्यय

अव्यय ऊ अविकारी शब्द ह जेकरा रूप पर कवनो विकारी तत्त्व जैसे लिंग, वचन, पुरुष, कारक आ काल के कवनो प्रभाव ना पड़ेला, यानी, हर हाल में जेकर मूल रूप बनल रहेला ओकरा के अव्यय कहल जाला।'

कालवाचक अव्यय-काल (समय) के बोध करावे वाला अव्यय कालवाक अव्यय कहाला। कालबोधक अव्यय हवे-'आजु' 'काल्हु', 'जल्दी', 'तुरते', 'कब', 'कबो-कबो', 'रोज-रोज', 'अबे', 'जबे', 'जल्दी' आदि।

स्थानवाचक अव्यय-स्थान भा स्थान विशेष के बोध करावे वाला अव्यय स्थानबोधक अव्यय कहाला। स्थानबोधक अव्यय हवे-नियरे, पारे, दूरे, बहरी, भीतर, भीतरी, सगरो, नगीच, इहवाँ, उहवाँ आदि।

दिशावाचक अव्यय-दिशा के बोध करावे वाला अव्यय दिशा-बोधक अव्यय कहाला। दिशाबोधक अव्यय हवे-ऐने, ओने, बाँये, दाँये, दहीने, उत्तरे, दक्खिने आदि।

स्थितिवाचक अव्यय-स्थिति के बोध करावे वाला अव्यय स्थिति-बोधक अव्यय कहाला। स्थितिबोधक अव्यय हवे-नीचे, तरे, उपरे।

प्रकारवाचक अव्यय-प्रकार के बोध करावे वाला अव्यय प्रकार-बोधक अव्यय कहाला। प्रकारबोधक हवे-एकबायक, बिरिया, अती आदि।

संख्यावाचक अव्यय-संख्या के बोध करावे वाला अव्यय संख्या-बोधक अव्यय कहाला। संख्याबोधक अव्यय हवे-एगो, दूगो, एकबेर, दूबेर, अकसरूआ आदि।

परिमाणवाचक अव्यय-परिमाण भा मात्रा के बोध करावे वाला अव्यय परिमाणबोधक अव्यय कहाला। परिमाणबोधक अव्यय हवे-उउरी, कुल्ही, बेसी, जादे, निकहन आदि।

स्वीकारवाचक अव्यय-स्वीकृति भा स्वीकार के बोध कराबे वाला अव्यय स्वीकारबोधक अव्यय कहाला। स्वीकारबोधक अव्यय हवे-हँ, हूँ, हिं, अवश्य, जरूर आदि।

निषेधवाचक अव्यय-निषेध भा अस्वीकार के बोध करावे वाला अव्यय निषेधवाचक अव्यय कहाला। निषेधवाचक अव्यय हवे-ना, नू, नाहीं, नूहीं, नहीं, मत आदि।

रीतिवाचक अव्यय-क्रिया के सुभाव भा रीति के बोध करावे वाला अव्यय रीतिवाचक अव्यय कहाला। रीतिवाचक अव्यय हवे-फटाफट, अचानक, झटपट।

संबंधवाचक अव्यय-दू विचार, भाव, शब्द भा वाक्य के बची संबंध बतावेवाला अव्यय संबंधवाचक अव्यय कहाला। संबंधवाचक अव्यय हवे-आ, अउर, अउरी, फेर फिनु भा, ना, चाहे, का आदि।

बोध प्रश्न

1. खाली जगह के सही विकल्प से भरीं।

(स्थानबोधक, संबंधवाचक, निपात, अव्यय, संख्याबोधक)

(क) ऊ अविकारी शब्द जेकर मूल रूप हर हाल में बनल रहेला ओकरा के ..... कहल जाला।

(ख) संस्कृत में शब्द के चार गो रूप नाम, आख्यात, उपसर्ग आउर ..... बा।

(ग) स्थान भा स्थान विशेष के बोध करावे वाला अव्यय..... कहाला।

(घ) संख्या के बोध करावे वाला अव्यय.....अव्यय कहाला।

(ङ) दू विचार, भाव शब्द भा वाक्य के बीच संबंध बतावेवाला अव्यय ..... अव्यय कहाला।

2. नपल-तुलल शब्द में उत्तर दिहीं।

(क) अव्यय केकरा के कहल जाला?

(ख) अव्यय कइसन शब्द ह विकारी की अविकारी?

(ग) विकारी तत्व कवन-कवन बा?

3. क्रियाभ्यास

(क) निपात के बारे में अपना गुरूजी से बतकही कइके ज्ञान बढ़ावे के चाही।

(ख) देशी भा ठेठ अव्ययन के वर्गीकृत एगो सूची बनाईं।

अध्याय 9

क्रिया

जवना शब्द से कवनों काम के कइल चाहे भइल बुझाय, ओकरे के क्रिया कहल जाला, जइसे-खाइल, पीअल, आइल, गइल, जीअल, मूअल वगैरह। क्रिया विकारी शब्द होले, ओकरा रूप में लिंग, बचन आ पुरुष के अनुसार बदलाव आवत रहेला।

भाषा के लघुत्तम इकाई वाक्य में क्रिया प्रधान होले। बल्कि क्रिया के बिना वाक्य के रचना होइये ना सके। वाक्य में संकेतित पदार्थ क्रिया के संदर्भ के बिना अपना अस्तित्व के सही पहचान ना दे पावे। क्रिये संज्ञा पदन का अर्थ के वाक्य में प्रक्षेपण करेले। संस्कृत के पद-भेद आख्यात के भोजपुरी, हिन्दी वगैरह के व्याकरण 'क्रिया' संज्ञा दिहल गइल बा।

क्रिया के मूल रूप के धातु कहल जाला जवना में प्रत्यय लगा के क्रिया के अलग-अलग रूपन के रचना होला। धातु क्रिया के प्रकृति ह। जइसे-खाइल, जागल, पढ़ल, बइठल क्रिया रूप खा, जाग, पढ़, बईठ धातु में इल, ल प्रत्यय लगा के बनल बा।

क्रिया के भेद

भोजपुरी में क्रियाभेद के पाँच गो आधार बा, प्रत्यय के आधार पर निष्पत्ति के आधार पर, कर्म के आधार पर, अर्थ के आधार पर आ संरचना के आधार पर।

प्रत्यय के आधार पर क्रिया के दूगो भेद होला- कृदन्त क्रिया आ तिङन्त क्रिया।

कृदन्त क्रिया - क्रिया के धातु रूप में कृत् प्रत्यय के योग से कृदन्त क्रिया के रचना होला, जइसे-हँसल, रोवल, पढ़ल, रखवार, देखनिहार, देखत, पढ़त, पढ़ के, उठके वगैरह। कृदन्त क्रिया दू प्रकार के पावल जालें-विकारी कृदन्त क्रिया आ अविकारी कृदन्त क्रिया।

विकारी कृदन्त क्रिया-विकारी कृदन्त क्रिया के चार गो प्रकार बा-(1) क्रियार्थक संज्ञा (2) कर्तृवाचक संज्ञा (3) अपूर्णवाचक कृदन्त आ (4) पूर्णतावाचक कृदन्त।

अविकारी कृदन्त क्रिया - अविकारी कृदन्त क्रिया के चार गो प्रकार बा- (1) पूर्वकालिक कृदन्त (2) तात्कालिक कृदन्त (3) अपूर्ण क्रियाद्योतक कृदन्त आ (4) पूर्ण क्रियाद्योतक कृदन्त।

विकारी कृदन्त

(1) क्रियार्थक संज्ञा- क्रिया के मूल धातु में ल, ला, व, न चाहे ए प्रत्यय के योग से भोजपुरी के क्रियार्थक संज्ञा के रचना होले, जइसे-हँसल नीमन ह, रोवल बाउर ह, पढ़ला से ग्यान होई, देखले-सुनले का होई, मनावन-दनावन लाग गइल वगैरह वाक्य में हँसल, रोवल, पढ़ला, देखले-सुनले आ मनावन-दनावन क्रियार्थक संज्ञा के रचना खातिर क्रम से ल, ला, ले, न कृत् प्रत्यय के प्रयोग कइल गइल बा।

(2) कर्तृवाचक संज्ञा-भोजपुरी में कर्तृवाचक संज्ञा के रचना खातिर धातु में बार, वाला, हार प्रत्यय के प्रयोग पावल जाला, जसे-रखवार (माँस के ढेर पर कुकुर (रखवार), देखनिहार, बनवनिहार (बनावे वाला), सुननीहार (सुनेवाला) वगैरह।

(3) अपूर्णतावाचक कृदन्त- भोजपुरी में अपूर्णवाचक कृदन्त धातु के सङ्गे अत, मते प्रत्यय जोड़ के बनेला, जइसे-निहारत (राह निहारत आँखि पथराइल), निहारते (आकाश निहारते बीतल रात), हेरत, हेरते (ढील हेरते आँखि लाग गइल) वगैरह।

(4) पूर्णतावाचक कृदन्त - भोजपुरी में पूर्णतावाचक कृदन्त धातु में 'ल' प्रत्यय लगाके बनावल जाला, जइसे-देखल लरिका, सुनल गीत, पढ़ल लरिकी, पाकल आम वगैरह।

अविकारी कृदन्त

पूर्वकालिक कृदन्त-भोजपुरी में क्रिया के पूर्वकालिका बतावे खातिर धातु में 'के' प्रत्यय के प्रयोग कइल जाला जइसे-पढ़के, जाके, खाके, नहाके, उठके वगैरह।

वाक्य प्रयोग-सीतवा पढ़ के खाई, रमुआ नहा के खाई, जटवा खाके जाई वगैरह। भोजपुरी में पूर्वकालिका कृदन्त के उपयोग क्रियाविशेषण के रूप में होला।

तिङन्त क्रिया

क्रिया में धातु रूप में तिङ् प्रत्यय लगा के तिङन्त क्रिया रूप के रचना होला। संस्कृत व्याकरण में क्रिया के तिङति रूप क साध्य आ कृदन्त के सिद्ध कहल गइल बा। 'साध्य' मतलब जवना क्रिया के सिद्ध होखे में संदेह होखे। आदेश, विधि, प्रार्थना, संभावना, प्रश्न आशीर्वाद, निमंत्रण सहित भविष्यत काल आदि के क्रिया हमेशा अनिश्चित चाहे संदिग्ध होले। मतलब एह सब में क्रिया के साध्य रूप रहेला। एह से इन्हन खातिर क्रिया के तिङन्त रूप चलेलें, अइसे त भोजपुरी कृदन्त प्रधान भाषा ह एकरा बावजूद एह भाषा में विधि, आदेश, प्रार्थना, नेवता सहित भविष्यतकाल वगैरह का क्रिया के तिङन्त रूप पढ़स, जास, रोवस, पढ़ऽ, **लिखऽ, दिहीं, दीहन, जइहन, खइहन वगैरह के प्रयोग पावल जाला। बाकिर भोजपुरी के वैयाकरण लोग क्रिया के तिङन्त रूप पर विचार नइखे कइलें।**

क्रिया के निष्पत्ति के आधार पर क्रिया भेद

वैयाकरण लोग क्रिया के शुरू होखे के अवस्था के साध्यावस्था आ पूरा होखे के अवस्था के सिद्धावस्था बतावत, एह दूनों अवस्था के आधार पर क्रिया के दूगो भेद बतवले बा-साध्य क्रिया आ सिद्ध क्रिया।

साध्य क्रिया- जब क्रिया के निष्पति ना भइल होला चाहे संदिग्ध होला त क्रिया साध्य होले, जइसे-राम आवस, सीता जास, रमुआ खाओ, मतेसरी जाओ, हरिआ पढ़े, गदेरना सुते। इहँवा आवस, जास, खाओ, जाओ, पढ़े, सुते क्रिया साध्य बा, सिद्ध नइखे। एह क्रियन से ई जानकारी

नइखे होत कि ई सब क्रिया होई कि ना। इहँवा क्रिया संदिग्ध बिआ। होखे, होखस, होई, होइहे वगैरह क्रिया साध्य क्रिया हवे स आ एह साध्य क्रियन के प्रयोग से सिद्धो क्रिया साध्य बन जाले, जइसे- रमुआ गइल होई, सुमन आइल होखे में गइल आ आइल में होई आ होखे लगला से क्रिया साध्य बन गइल बा। संदेह, संभावना आ भविष्यत काल क्रिया के साध्य क्रिया होले।

सिद्ध क्रिया-जवना क्रिया से क्रिया के निष्पति निश्चित रूप से उजागर होखे, ओकरा के सिद्ध क्रिया कहल गइल बा। एह क्रियन के सम्पन्न होखे में कहीं-कवनो संदेह नइखे, जइसे-रधिका ससुरा गइली, लगहर दुअरा आ गइल, किशन इस्कूल गइल बा, बाबू जी घरे अइले हँ। वर्तमान आ भूतकाल के क्रिया सब सिद्ध क्रिया होले।

कर्म के आधार पर क्रिया भेद

वाक्य में कर्त्ता आ कर्म के स्थान क्रिया के संदर्भ में बहुते महत्त्व के होला। क्रिया के फल या त कर्त्ता पर पड़ेला चाहे कर्म पर। वाक्य में कर्त्ता जरूर रहेला, बाकिर कुछ क्रिया कर्म लेवेले आ कुछ ना लेवे। एह से क्रिया द्वारा कर्म लेवे आ ना लेवे के आधार पर क्रिया के दूगो भेद होला-सकर्मक क्रिया आ अकर्मक क्रिया।

सकर्मक क्रिया-जवना क्रिया के फल कर्त्ता के अलावे कर्मों पर पड़े ओकरा के सकर्मक क्रिया कहल जाला, जइसे-गाय कुटी खा तिआ। इहाँ खाइल क्रिया के फल कर्म कुटी पर पड़ता । एह से 'खाइल' सकर्मक क्रिया ह। जब क्रिया दू कर्म के विधान करे आ ओकर फल दूनों पर पड़े

त ऊ **द्विकर्मक क्रिया** कहाले, जइसे-माई बेटा के दूध पिआवतारी। इहाँ पीये के फल बेटा आ दूध दूनों पर पड़ता।

अकर्मक क्रिया-जवना क्रिया के फल खाली कर्त्ता पर पड़ेला, जइसे- जीव घबराता, ऊ लजातिआ, राम सुतता, हवा बहता में घबराये, लजाये, सुते आ बहे के क्रिया कर्त्ता द्वारा सम्पन्न होखत बा आ ओकर फलो कर्ते पर पड़ता। इहाँ कवनो कर्म के जरूरते नइखे। एह से इहाँ क्रिया अकर्मक बा।

अर्थ के आधार पर क्रिया भेदः

अर्थ के आधार पर क्रिया के चार गो भेद बतावल गइल बा- प्रेरणार्थक क्रिया, कर्मकर्तृक क्रिया, पूर्वकालिक क्रिया आ क्रियार्थक क्रिया।

प्रेरणार्थक क्रिया-जहाँ कर्त्ता क्रिया व्यापार के प्रेरणा देवेला, उहाँ क्रिया प्रेरणार्थक होले। एह क्रिया के कर्त्ता दूगों होलें। एगो मुख्य कर्त्ता जे असल में काम करेलें आ दोसरे प्रेरक चाहे प्रयोजक कर्त्ता जे प्रेरणा देलें। जइसे गुरुजी नितेश से किताब पढ़वावतारे। इहँवा मुख्य कर्त्ता नितेश हवें, बाकिर गुरु जी प्रेरक बाड़े। ऊ प्रेरणा देके नितेश से किताब पढ़वाव तारे। एह से ऊ (गुरुजी) प्रयोजक कर्त्ता बाड़े। पीटल-पिटवावल, काटल-कटवावल, लिखल-लिखवावल, चढ़ल-चढ़वावल, मिटावल-मिटवावल, साटल-सटवावल वगैरह प्रेरणार्थक क्रिया के उदाहरण बाड़ेस। एकरा खातिर मूल क्रिया अंतिम भोजपुरी 'ल' प्रत्यय हटा के प्रायः 'वावल' प्रत्यय जोड़ दीहल जाला।

कर्म कर्तृक प्रत्यय-जहँवा कर्म कर्त्ता जइसन क्रिया के साथे प्रयोग में आवेला आ वक्ता कर्त्ता के प्रयोग ना करे तब उहँवा कर्म कर्तृ

क्रिया होले, मतलब उहँवा कर्मे क्रिया के कर्त्ता बन जाला। जइसे-भात पाकता, गाछ कटाता, रोटी जरता वगैरह, वाक्य में वक्ता के कर्त्ता के उल्लेख कइल जरूरी नइखें, पाकल, काटल, जरल सकर्मक क्रिया हवेस। भात, गाछ, रोटी कर्म बाड़ेस, बाकिर इहँवा एह सब के प्रयोग कर्त्ता जइसन भइल बा। एह से इहँवा क्रिया कर्मकर्तृक कहाई।

पूर्वकालिक क्रिया-जवन क्रिया वाक्य का पूर्ण (विधेय) क्रिया के पहिले घट जाय ओकरा के पूर्वकालिक क्रिया कहल जाला, जइसे-कविता पढ़ के जाई, किसन खेल के पढ़ी, सर्वेन्द्र खाके पढ़ी, ज्ञान्ति पढ़के खइहन वगैरह। एह वाक्यन में पढ़के, खेलके, खा के पूर्वकालिक क्रिया ह। पूर्ण क्रिया जाई, पढ़ी आ खइहन के पहिलहीं एह क्रिया के व्यापार घटित हो जाता। पूर्वकालिक क्रिया खातिर धातु रूप में भोजपुरी के 'के' प्रत्यय लगावल जाला।

क्रियार्थक क्रिया-विधेय चाहे पूर्ण क्रिया जवना के अर्थ होले, ओकरे के क्रियार्थक क्रिया कहल जाला। एकरा नाँवे से ई उजागर हो जाता कि मुख्य चाहे पूर्ण क्रिया के अर्थे खातिर ई क्रिया आवेले, जइसे-विजय जी खीर खाये हमरा घरे अइहें, हम चाय पीये उपधेया जी के घरे जाएब, वाक्य में ई बात साफ बा कि हम उपधेया जी किहाँ जायेब तबे चाय पीअब, विजय हमरा घरे अइहें तबे खीर खइहें। इहँवा क्रियार्थक क्रिया मुख्य चाहे पूर्ण क्रिया के बाद घटित होई। ई क्रिया पूर्वकालिक क्रिया के उल्टा ह। पूर्वकालिक क्रिया पूर्णक्रिया के पहिले घटित हो जाले आ क्रियार्थक क्रिया पूर्ण क्रिया के बाद होला।

संयुक्त क्रिया के भेद

(i) **अभ्यासबोधक**-भूतकालिक कृदन्त का आगा 'कर' के प्रयोग से अभ्यासबोधक बनेला। एह से क्रिया के करे के अभ्यास मालूम होला। जइसे-ऊ गावल करेलन। तूँ हँसल करेल। हम खेलल करीले।

(ii) **इच्छाबोधक**-कृदन्त का आगे 'चाहल' का योग से इंच्छाबोधक संयुक्त क्रिया बनेले। एह से कर्त्ता का कवनो काम करे का इच्छा के बोध होला। जइसे-हम किताब देखे के चाहत बानी। ऊ जीअल चाहतारन।

(iii) **अवधारणबोधक**-पूर्वकालिक कृदन्त में 'उठल, बइठल, लेल, देल' का प्रयोग से ई संयुक्त क्रिया बनेला। ए से धृष्टता, उतावलापन, औचकपन के भी बोध होला। जइसे-सभे चिहा उठल। मार बैठल। तूँ कह देल। संभे सुन लेलक। गाड़ी लड़ गइल मगर हम भागे से बाँच गइनी।

(iv) **आरम्भबोधक** -एह संयुक्त क्रिया के निर्माण क्रियार्थक संज्ञा का साथ 'लागल' का योग से होला। एह से क्रिया आरम्भ होखे के बोध होला। जइसे-पानी बरसे लागल। लरिका स पढ़े लागल। इहाँ क्रियार्थक संज्ञा के प्रत्यययुक्त संश्लिष्ट रूप लोकमुख से व्यवहार में बा। जइसे-बरसल-बरसे, पढ़ल-पढ़े।

(v) **निरन्तरताबोधक**-सकर्मक क्रिया का आगे 'जा', 'रह' का मेल से निरन्तरताबोधक संयुक्त क्रिया बनेले। जइसे-लिखत जा। कहत जाईं सुनत रह। पावत रहनी। खात रहलें।

(vi) **निश्चयबोधक**-क्रिया का आगा 'ले', 'दे', 'बइठ' का मेल से निश्चय-बोधक संयुक्त क्रिया बनेला। ए से मुख्य क्रिया का व्यापार का निश्चय के बोध होला। जइसे-ना मनब, त हम मार बइठब। कह लेल? कह घाल। ऊ चल पड़लन।

(vii) **शक्तिबोधक**-धातु के आगा 'सकल' जोड़ला से शक्तिबोध के संयुक्त क्रिया बनेले। ए से कर्त्ता का काम करे का शक्ति के बोध होला। जइसे-तूँ चल सकेल। ऊ दौड़ सकीहें। हम पढ़ सकीले। ऊ पढ़ सकेलन।

(viii) **समाप्तिबोधक**-धातु का आगा 'चुकल' जोड़ला से संयुक्त क्रिया बनेले। एह से मुख्य क्रिया के समाप्ति आ पूरा हो गइला के बोध होला। जइसे-हम खा चुकनी। ऊ पढ़ चुकलन।

(ix) **अनुमतिबोधक**-क्रियार्थक संज्ञा का आगा 'देल' जोड़ला से ई संयुक्त क्रिया बनेले। ए से कवनो काम करे देवे के अनुमति देवे भा ना देवे के बोध होला। जइसे-उनका के जाय द । तूँ हमरा के बोले ना देल। लरिका के खेले द ।

(x) **नित्यताबोधक** -वर्तमानकालिक कृदन्त का आगे 'आइल, रहल, गइल' का मेल से ई संयुक्त क्रिया बनेले। एकरा से क्रिया का बन्द ना होखे का नित्यता के बोध होला। जइसे-पानी बरसत रही। लरिका पढ़त गइल। माधो बोलत आवत रहे।

(xi) **अवकाशबोधक**-क्रियार्थक संज्ञा का बाद 'पावल' जोड़ला से ई संयुक्त क्रिया बनेले। ए से क्रिया का निष्पन्न होखे में अवकाश के

बोध होला। जइसे-ऊ बोल ना पवलन। चोर भाग ना पावे। हम हँस ना पवनी।

(xii) आवश्यकताबोधक-क्रियार्थक संज्ञा का बाद 'चाहीं', 'पड़ल' का मेल से ई संयुक्त क्रिया बनेले। ए से काम का आवश्यकता भा विवशता के बोध होला। जइसे-उनका जाये के चाहीं। दुखिया के मदद करे के चाहीं। साँच बात कहे के पड़ल।

(xiii) योग्यताबोधक-क्रिया का आगा 'बनल' जोड़ला से ई संयुक्त क्रिया बनेले। ए से क्रिया का सम्पादन में योग्यता के बोध होला। जइसे-हमरा से उनकर दुख देखल ना गइल। उनका कुछओ कहत ना बनल। चीज अछइत का लाथ कइल बनी? ई क्रिया अधिका नकारात्मक आ प्रश्नवाचक संदर्भ में प्रयोग होला।

नामधातु-जब कवनो संज्ञा (नाम) धातु के रूप में प्रयुक्त होय त ओकरा के नामधातु कहल जाला, एह नाम धातुअन से भी सब तरह के क्रियापद बनेला। जइसे-कविता सविता के लतिया दिहली, छोटकु बड़कु से बतिआवत बाड़न। इहँवा 'लात' आ 'बात' नाम बा जवना से लतिआवल, बतिआवल नामधातु क्रिया बनल बा। विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव 'भोजपुरी व्याकरण के रूपरेखा' में बतवले बाड़न कि 'मूल क्रिया के अलावे संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, अव्यय से भी क्रिया बनेले, ओइसने क्रिया के नाम नामधातु कहल जाला, जइसे-

(i) संज्ञा से बनल नाम धातु - लात -लतिआवल, हाथ-हथिआवल, ठेहुना - ठेहुनिआवल, अँगुरी - अँगुरिआवल, गरदन -

गरदनिआवल, छाती- छतिआवल, बात-बतिआवल, करवट- करवटल, लाठी-लठिआवल, घाम- घमावल, पानी-पनिआइल, फेन-फेनावल, दुख-दुखावल, पाँजा-पँजिआवल, गोड़-गोड़िआवल, पीठ-पिठिआवल, केहुनी-केहुनिआवल, मुक्का-मुकिआवल, कनखी-कनखिआवल, कान-अकानल, गारी-गरिआवल, जाड़-जड़वल, भारी-भरिआवल, भेंट-भेंटाइल, नाक-नकिआवल, आगी-अगिआएल, लोर-लोराइल, लाज-लजाइल, झोंटा-झोंटिआवल आदि।

(ii) सर्वनाम से बनल नामधातु- जइसे अपन से अपनावल

(iii) विशेषण से बनल नामधातु-लाल-ललिआएल, हरिअर-हरिआराइल, मोट-मोटाइल, ठाढ़-ठढ़िआएल, भक्कू-भकुआएल, सोझ-सोझिआवल, लम्मा-लमरावल, ऊँच-ऊँचकावल, ठंढा-ठंढावल, जवान-जुआएल, सोहावन-सोहाएल, गरहू-गरहुआइल, मीठ-मिठाएल, करिया-करिआएल, पीअर-पिअराएल, दूबर-दुबराएल, गरम-गरमाएल, ढीठ- ढिठाएल, टेंढ़-टेढ़िआवल, गोल-पगलाएल, गाढ़-गढ़ाएल, तीत-तिताएल, खट्टा-खट्टाएल।

कुछ क्षेत्र में 'ए' का जगे 'ई' के प्रयोग होला-जइसे गरमाइल, पगलाइल, खट्टाइल।

(iv) अव्यय से बनल नाम धातु-नियरा-नियराइल, पाछा-पछुआइल, बाहर-बहरिआइल, हँ-सकारल, न-नकारल, आगा- अगुआइल, नजदीक- नजदिकाइल नगचि-निगचाइल, औचक- अकचकाइल।

(v) अनुकरण से बनल नामधातु-कें कें-कंकिआइल, ठक ठक-ठकठकावल, चों चों-चोंचिआइल, छप छप-छपछपावल, कटकट-

कटकटावल, फों फों-फोंफिआइल, खट खट-खटखटावल, झन झन-झनझनावल, छों छों-छोंछिआएल, में में-मेंमिआएल भा मेंमिआइल।

बोध प्रश्न

1. क्रिया के परिभाषा दीं।
2. भोजपुरी में क्रियाभेद के कव गो आधार बा।
3. प्रत्यय के आधार पर क्रिया के दू गो भेद होला।
4. संरचना के आधार पर क्रिया के कव गो भेद होला।
5. संयुक्त क्रिया के भेद बताई।

अध्याय 10

काल

काल के मतलब होला-समय। काम करे भा होखे के कवनो समय होला। जवना समय में कवनो काम पूरा भा शुरू होला ओकरा के काल कहल जाला। एह तरीका से -**क्रिया के ओह रूपांतर के काल कहल जाला जवना से कर्त्ता द्वारा नियत कार्य-व्यापार के करे के समय के बोध होला।**

क्रिया के समय या त बीत गइल हो सकेला भा हो सकेला कि अबहीं चलते भा आगे आवे वाला समय में होखे के संभावना हो सकेला। एह तरह से 'काल' के तीन गो स्थिति हो जाला। जवन क्रिया बीत गइल ओकरा के भूतकाल में, जवन क्रिया चल रहल बिआ ओकरा के वर्तमान काल में आ जवन क्रिया के आगे आवेवाला समय में शुरू होखे के संभावना बा ओकरा के भविष्यत काल में रखल जाला। एह तरह से काल तीन प्रकार के होला-1.भूतकाल, 2. वर्तमान काल, 3. भविष्यत काल।

भूतकाल

जवन क्रिया से काम के पूरा समाप्त हो गइला के बोध होखेला ओकरा के भूतकाल के क्रिया कहल जाला। जइसें-'राम गइलन', 'सीता खा लिहलीं', एह में जाए आ खाए के काम पूरा हो गइल बा।

भूतकाल के छव गो भेद होला-1. सामान्य भूत, 2. पूर्णभूत 3. अपूर्ण भूत, 4. आसन्नभूत भा तात्कालिक भूत 5. संदिग्ध भूत (अपूर्ण संदिग्ध भूत, पूर्ण संदिग्ध भूत) 6. हेतुहेतुमद् भूत।

1. सामान्य भूत-क्रिया के जवना रूप से भूतकाल का सामान्य रूप के बोध होला ओकरा के सामान्य भूतकाल कहल जाला। एह में क्रिया के घटित समय विशेष के ज्ञान ना प्राप्त होला। जइसे-सीता गइली, राम गइलन।

2. आसन्न भूत- क्रिया के जवना रूप से आसन्न भा निकट के समय में अर्थात् तत्काल घटित होखे के सूचना मिले ओकरा के आसन्न भूतकाल कहल जाला। 'खेल लेलन', 'खा लेलन'।

3. पूर्णभूत-क्रिया के जवना रूप से क्रिया के पूरा होखे के समय के ई स्पष्ट बोध हो जाला कि क्रिया के खत्म भइला काफी समय हो गइल बा, त ओकरा के पूर्णभूत कहल जाला। जइसे-'ऊ खा लेलन', 'ऊ खेल लेलन'।

4. अपूर्ण भूत-क्रिया के जवना रूप से इ पता चले कि क्रिया पहिलहि से हो रहल बा, बाकिर ऊ समाप्त भइल की ना एकर पता ना चले ओकरा के अपूर्ण भूत कहल जाला। जइसे- 'ऊ खेलत रहलन', 'रमेसर खात रहलन', 'गीता जात रहली।

5. संदिग्ध भूत-क्रिया के जवना रूप से इ पता ना चले कि क्रिया भूतकाल में भइल की ना अर्थात् क्रिया के पूरा होखे के संबंध में

संदेह बनल रहे त ओकरा के संदिग्ध भूत कहल जाला। जइसे-ऊ खइले होइइन', 'ऊ गइल होइहन', 'ऊ खेलले होइहन'। 'बाबूजी खा लेले होइहन'।

6. हेतुहेतुमदभूत-एह में क्रिया के सशर्त पूरा होखे के भाव होला। कहे के मतलब बा कि पहिलकी क्रिया के पूर्णता दोसरकी क्रिया पर निर्भर करेले। जइसे 'ऊ अइतन त हम जइतीं'।

वर्तमान काल

'क्रिया के जवना रूप से क्रिया के व्यापार के निरंतरता के अर्थात् वर्तमान समयो में चलत रहे के बोध होखेला ओकरा के वर्तमान काल कहल जाला।' जइसे-ऊ खात बाड़न, हम जात बानी, राधा खेलत बाड़ी। एह में 'खाए, जाए, खेले' के क्रिया वर्तमान समय में भी चल रहल बा, अभी खत्म नइखे भइल।

वर्तमान काल के पाँच गो भेद होला-

1. सामान्य वर्तमान, 2. अपूर्ण वर्तमान, 3. पूर्ण वर्तमान, 4. संदिग्ध वर्तमान, 5. संभाव्य वर्तमान

1. सामान्य वर्तमान-क्रिया के जवना रूप से क्रिया के वर्तमान समय में हो रहल मात्र पावल जाय ओकरा के सामान्य वर्तमान कहल जाला। जइसे 'तू खात बाड़', 'हम पढ़त बानी', 'ऊ पढ़त हवे', 'ऊ पढ़त बड़ुए'।

2. संदिग्ध वर्तमान-क्रिया के जवना रूप से वर्तमान काल में कार्य के होखे के संबंध में संदेह बनल रहे ओकरा के संदिग्ध वर्तमान

कहल जाला। जइसे-'ऊ शायद आवत होइहन', 'बाबूजी आवत होइब।

3. अपूर्ण वर्तमान-क्रिया के जवना रूप से कार्य के वर्तमान काल में लगातार होत रहे के बोध होय आ कार्य अभी पूरा ना भइल होखे, ओकरा के अपूर्ण वर्तमान कहल जाला।

जइसे- ऊ खा रहल हवन। रमेसर खेल रहल बाड़े। ऊ पढ रहल बाड़न।

4. पूर्ण वर्तमान-क्रिया के जवना रूप से कार्य के वर्तमान काल में पूरा होखे के बोध होला ओकरा के पूर्ण वर्तमान कहल जाला। जइसे-'हम खेल लेली ह', 'ऊ खा लेली ह', 'ऊ गइली ह'।

5. संभाव्य वर्तमान-क्रिया के जे रूप से वर्तमान काल में कार्य के पूरा होखे के संभावना के बोध होखे ओकरा के संभाव्य वर्तमान कहल जाला। जइसे-'राम लौटल होइहन', 'ऊ जात होखिहन', 'रमेसर खेत पटवले होइहन'।

भविष्यत् काल

क्रिया के जवना रूप से कार्य के आगे आवेवाला समय में होखे के बोध होला ओकरा के भविष्यत् काल कहल जाला।' जइसे-हम जाइब, ऊ खेलिहन, सीता गीत गइहन। सब वाक्य में जाये, खेले, गावे के क्रिया आवेवाला समय में होखे के भाव प्रकट होता।

भविष्यत् काल के दू गो रूप प्रचलित बा-

1. सामान्य भविष्यत् 2. संभाव्य भविष्यत्

1. सामान्य भविष्यत्-जहाँ साधारण रूप से आवेवाला समय में कार्य के करे भा होखे के भाव पावल जाला ओकरा के सामान्य भविष्यत् काल कहल जाला। जइसे-'ऊ जइहन', 'ऊ खइहन', 'सीता गीत गइहन'।

2. संभाव्य भविष्यत्-भविष्य में कार्य होखे में संदेह भा संभावना भा इच्छा के बोध होखे ओकरा के संभाव्य भविष्यत् कहल जाला। जइसे-ऊ जा सकेलन', 'तबियत ठीक रही त खा लिहन', 'पढ़िहन त फर्स्ट हो जइहन'।

बोध प्रश्न

1. खाली जगह के सही विकल्प से भरीं।

(समय के बोध, भूतकाल, वर्तमान काल, सामान्य वर्तमान, संभाव्य वर्तमान, भविष्यत् काल, संभाव्य भविष्यत्)

(क) क्रिया के ऊ रूपांतर के काल कहल जाला जवना से कर्त्ता द्वारा नियत कार्य व्यापार के करे के ..... होला।

(ख) जवन क्रिया से काम के पूरा मतलब समाप्त हो गइला के बोध होखेला ओकरा के .....के क्रिया कहल जाला।

(ग) क्रिया के जवना रूप से क्रिया के व्यापार के निरंतरता के अर्थात् वर्तमान समयो में चलत रहे के बोध होखेला ओकरा के ..... कहल जाला।'

(घ) क्रिया के जवना रूप से क्रिया के वर्तमान समय में हो रहल मात्र पावल जाय ओकरा के.....कहल जाला।

(ङ) क्रिया के जवना रूप से वर्तमान काल में कार्य के पूरा होखे के संभावना के बोध होखे ओकरा के ..... कहल जाला।

(च) क्रिया के जवना रूप से कार्य के आगे आवेवाला समय में होखे के बोध होला ओकरा के ..... कहल जाला।

(छ) भविष्य में कार्य होखे में संदेह भा संभावना भा इच्छा के बोध होखे ओकरा के ..... कहल जाला।

2. मिलान करीं

अ	ब
(क) क्रिया के जवना रूप से भूतकाल के सामान्य रूप के बोध होला ओकरा के .....कहलजाला।	(i)सामान्य वर्तमान
(ख) क्रिया के जवना रूप से आसन्न भा निकट के समय में अर्थात् तत्काल घटित होखे के सूचना मिले ओकरा के ..... कहल जाला।	(ii) समान्य भूत
(ग) क्रिया के जवना रूप से क्रिया के वर्तमान समय में हो रहल मात्र पावल जाय ओकरा के ..... कहल जाला।	(iii) आसन्न भूत
(घ) क्रिया के जवना रूप से वर्तमान काल में कार्य के होखे के संबंध में संदेह बनल रहे ओकरा के ..... कहल जाला।	(iv) पूर्ण वर्तमान
(ङ) क्रिया के जवना रूप से कार्य के वर्तमान काल में पूरा होखे के बोध होला ओकरा के ..... कहल जाला।	(v) संदिग्ध वर्तमान

3. सही विकल्प पर (✓) आऊर गलत पर (×) निसान लगाईं ।

(क) भूतकाल के दू गो भेद होला। ( )

(ख) साधारण रूप से आवेवाला समय में कार्य करे भा होखे के भाव पावल जाला ओकरा के सामान्य भविष्यत् काल कहल जाला। ( )

(ग) क्रिया के जवना रूप से वर्तमान काल में कार्य के पूरा होखे के संभावना के बोध होखे ओकरा के संभाव्य भविष्यत कहल जाला। ( )

(घ) 'ऊ खा रहल हवन' अपूर्ण वर्तमान काल में बा। ( )

(ङ) 'ऊ खइले होहन' में 'खइले' क्रिया पूर्ण भूत ह। ( )

(च) हेतुहेतुमदभूत में क्रिया के सशर्त पूरा होखे के भाव होला। ( )

4. कोष्ठक में दिहल निर्देश के अनुसार खाली जगह पूरा करीं-

(क) रमेसर अबही.....। (अपूर्ण भूत)

(ख) सुरेश बाजारे .....। (पूर्णभूत)

(ग) हम उनका के.....त पहचान.....। (हेतुहेतुमदभूत)

5. नपल-तुलल शब्द में उत्तर दिहल जाय।

(क) काल केकरा के कहल जाला।

(ख) काल के कैगो आ कवन-कवन भेद होला। उदाहरण समेत लिखल जाय।

(ग) भूतकाल के परिभाषा आऊर भेद लिखल जाय।

(घ) हेतुहेतुमदभूत के परिभाषा लिखल जाय।

जाने के चाही

(क) काल के संस्कृत में लकार अनुसार अनेक रूप कइल गइल बा, जेकर संख्या 12 गो बा, ओहनी के उदाहरण समेत लिखल जाय।

(ख) हेतुहेतुमदभूत आ एकरा से बनेवाली क्रिया के संग्रह कइल जाय।

(ग) सामान्य भूत से कवन-कवन क्रिया बनेलीसन।

अध्याय 11

वचन

व्याकरण में शब्दन के संख्याबोधक विकारी रूप के 'वंचन' कहल जाला। व्याकरण के जानकार लोग के अनुसार, 'संज्ञा', सर्वनाम, विशेषण आ क्रिया के जवना रूप से संख्या के बोध होय, ओकरा के 'वचन' कहल जाला। वस्तु के संख्या 'एक' आ एक से अधिक 'अनेक' के आधार पर 'वचन' के दू गो भेद कइल गइल बा- एक बचन आ बहुबचन।

एकवचन-जवना शब्द-रूप से एक पदार्थ चाहे एक व्यक्ति के बोध होला, ओकरा के एकवचन कहल जाला, जइसे-लइका, बेटी, घोड़ा, हाथी, बाल्टी वगैरह।

बहुवचन- जवना शब्द रूप से एक से अधिक पदार्थ चाहे व्यक्ति के बोध होला, ओकरा के बहुवचन कहल जाला, जइसे-लइकन, घोरिन, हाथिन, बाल्टियन वगैरह।

भोजपुरी के शब्द अपना मूल रूप में एकवचन होला उनका में बहुवचन सूचक प्रत्यय चाहे बहुत्ववाची शब्द लगा के बहुवचन बनावे के प्रचलन बा।

भोजपुरी में वचन परिवर्त्तन के नियम :

1. भोजपुरी के एकवचन वाला शब्दन में अन, अनि, अन्ह, अन्हि, आन्हि, न, न्ह, इन, उन, वनि, वन्हि, वन, वन्ह वगैरह प्रत्यय जोड़ के बहुवचन बनावल जाला, जइसे-गाछ-गाछन, बएल-बएलन, लइका-लइकन, घर-घरन्ह/घरन, चमार-चमारन्ह, चमारन्हि, गाछ-गाछन, गाछन्हि/गछवन वगैरह। एकरा में आकारान्त शब्द के अकारान्त आ ईकारान्त शब्द के इकारान्त बना के एह प्रत्ययन के लगावल जाला।

2. इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त आ ऊकारान्त एकवचन शब्दन के 'इ' चाहे 'ई' के 'इय' आ 'उ' चाहे 'ऊ' के 'उव्' हो जाला। अन से मिलके 'ई' आ 'ऊ' क्रमशः 'इयन' आ उवन हो जाला। कबो-कबो ई, ऊ का ह्रस्व आ 'अन' का 'अ' के लोप हो जाला, जइसे- हाथी-हाथियन/हाथिन, भालू-भालुवन/भालुन, बाबू-बाबुवन/बबुवन/ बाबुअन वगैरह।

3. भोजपुरी में सब, सभी, स, लोग, लोगन्ह, लोगे वगैरह बहुत्व सूचक चाहे समुच्चयवाचक शब्दन के जोड़ के एकवचन से बहुवचन बनावल जाला, जइसे-लरिका- लरिका सब, लरिका स, लरिका लोग, लरिका लोगे वगैरह/ सब, सभी शब्द के पहिलहुँ जोड़ के बहुवचन बनावल जाला, जइसे-सब हाथी/सभ हाथी, सब घोड़ा/ सभ घोड़ा, सब लरिका/ सभ लरिका, सब गाय/ सभ गाय वगैरह।

बोध प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. भोजपुरी में वचन के कए गो भेद बतावल बा।

(क) एगो (ख) तीन गो

(ग) दू गो (घ) चार गो

2. 'लरिका' शब्द के बहुवचन का होई।

(क) लरके (ख) लरिकन

(ग) लरकी (घ) लरकों

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. वचन का ह? एकरा भेदन के परिचय दीं।
2. भोजपुरी में वचन परिवर्तन के नियम का बा, उदाहरण सहित फरिआ के लिखीं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. वचन आ ओकरा भेदन के परिचय देत एकवचन से बहुवचन बनावे के नियम के बारे में बताईं।

अध्याय 12

लिंग

''संज्ञा के जवना रूप से वस्तु चाहे व्यक्ति के नर चाहे मादा जाति के बोध होय, ओकरा के व्याकरण में **लिंग** कहल जाला।

'लिंग' संस्कृत के शब्द ह जवना के अर्थ 'चिह्न' बतावल गइल बा। चिह्न मतलब जवना से संज्ञा के पहचानल जाव। अइसे व्याकरण चाहे भाषा-विज्ञान में लिंग-विचार के कवनो तार्किक आधार नइखे दिहल गइल जवना से लिंग निर्णय के स्थायी नियम बन सके। सामान्य तौर पर लिंग के दूगो प्रकार बा-प्राकृतिक आ व्याकरणिक। प्राकृतिक लिंग के लक्षण बतावल बा कि स्त्री स्तन आ केशावाली होली आ पुरुष लोमश (बर-बर रोआँ वाला)। जहाँ एह दूनो चिह्न वाला वस्तु पुल्लिंग, स्त्री चिह्नवाली वस्तु स्त्रीलिंग।

भोजपुरी में लिंग के दुइएगो प्रकार बा-**पुल्लिग** आ **स्त्रीलिंग**।

भोजपुरी के प्राणी वाचक शब्दन में लिंग भेद कइल आसान बा, भोजपुरी में प्रयुक्त प्राणीवाचक, संबंध सूचक, पदसूचक, जातिसूचक शब्दन के लिंग भेद के उदाहरण बा-

प्राणीवाचक - बैल-गाय, भइँसा-भइँसी, बकरा-बकरी, कुत्ता-कुत्तिया, पिल्ला-पिल्ली, गदहा-गदही, बाघ-बाघिन, बानर-बनरी वगैरह।

संबंध सूचक - बाप-मतारी, भाई-बहिन, भाई-भउजाई, बेटा-बेटी, भतीजा-भतीजी, पोता-पोती, नाती-नतिनी, बेटा-पतोह, चाचा-चाची, दादा-दादी, जाउत-जइधी, ससुर-सास, फूफा-फुआ, आजा-आजी, देवर-दिआदिन वगैरह।

पदसूचक - मालिक-मलकिनी, गुरु-गुरुआइन, चेला-चेलिन, माहटर-महटराइन चाहे माहटरिन, दरोगा-दरोगाइन, राजा-रानी, वगैरह।

जाति सूचक- बरहामन-बरहामनी, राजपूत-राजपुतनी/राजपुताइन, भूमिहार (भूइंहार)-भूमिहारिन (भूइंहारिन), कायथ-कायथिन, पंडित-पंडिताइन, साव-सहुआइन, तेली-तेलिन, माली-मालिन, अहिर-अहिरिन, मेहतर-मेहतरिन वगैरह।

भोजपुरी में प्राणिवाचक छोट जीव, कीड़ा-मकोड़ा सब के पुल्लिंग रूप में प्रयोग बा ओकर, स्त्रीलिंग रूप नइखें, जइसे-फुफुन्दी, छुछुन्दर, लीख, ढील, गोजर, बिच्छी वगैरह के प्रयोग पुल्लिंग रूप में प्रचलित बा। कुछ प्राणीवाचक शब्द के खाली स्त्रीलिंग रूप बा, पुल्लिंग रूप नइखे, जइसे-सउतिन, एहवाती, चुरइन, कोइल, धोबिन (एगो चिरई) वगैरह। कुछ प्राणीवाचक खातिर दू-दू गो शब्द एके लिंग में प्रचलित बा, जइसे-भइंस, भइंसी (दूनो स्त्री.) जनाना-जनानी (दूनों स्त्री.) वगैरह।

भोजपुरी में क्रिया आ विशेषण के जरिये लिंग सूचित होला, जइसे-

क्रिया- राम जाता/जा तारन

सीता जातिया/जा तारी

विशेषण- बरका लइका/ लरिका
बरकी लइकी/ लरिकी

भोजपुरी में संज्ञा के लिंग हिन्दी जइसन संबंध सूचक विभक्ति चाहे परसर्ग के प्रभावित ना करे। एकरा में हमेशा एके परसर्ग चाहे विभक्ति 'के' के प्रयोग होला, जइसे-देश के नर, देश के नारी, देश के सम्पत्ति वगैरह। एकरा में देश का नर, देश की नारी, देश की सम्पत्ति जइसन 'का' आ 'की' के प्रयोग ना होके खाली 'के' के प्रयोग प्रचलित बा।

भोजपुरी के लिंग सूचक प्रत्यय

(क) पुल्लिंग प्रत्यय-

भोजपुरी में 'अ' आ 'आ' से अंत होखे वाला शब्द प्राय: पुल्लिंग होला, जइसे-

अकारान्त शब्द-घर, दुआर, मचान, परात, बाँस, आम, गाँज, खोंप, मेंह, खेत, हर जुआद, पीपर, बूँट, बबूर, लूक, आङ्गन, लोर, असकत, अपटन, जमघट, झोंक, ठाट, मदर, बाप, ससुर, सार, मल्लाह, ढ़लोहार, कोंहार, सोनार, इयार, देहात, सेवार, उड़िस, जोंक, ढ़ील वगैरह।

अपवाद-सड़क, सरकार, साइकिल, रेल, कमीज वगैरह।

आकारान्त शब्द-हवा, पछुआ, हाथा, दखिनहा, दिअरखा, खपड़ा, नरिआ, रहेठा, केरा, ढाठा, भूसा, गड़हा, खावा, हेंगा, खूँटा, बीआ, पैना, महुआ, लोटा, छनवटा, बाल्टा, पचखा, लेवा, डोरा, बरछा, छाता, सीमिआना, बगैरह।

अपवाद-पुरवइया, खटिया, जमुनिया, थरिया, बगइचा वगैरह

भोजपुरी में उकारान्त आ ऊकारान्त शब्द पुल्लिंग होलें, जइसे-बालू, आलू, गेंहूँ, कोल्हू, चीजु, राहु, खड़ाऊँ, तम्बू (तमू), नीबू, मधु, लट्टू, लेहू वगैरह।

(ख) स्त्रीलिंग प्रत्यय -

इकारान्त आ ईकारान्त शब्द भोजपुरी में स्त्रीलिंग होलें, जइसे-राति, बाति, नदी, उत्तरही, दखिनही, फुफेरी, ममेरी, चचेरी, खाटी, चउकी, गड़ही, बाल्टी, दँवरी, लरही, डाढ़ि, छाड़ि, छिपुली, गगरी, बटुली, चरखी, गँड़ासी, खुरूपी, गमछी, जोन्ही, दुभि वगैरह।

अपवाद-पतई, बालि, कोबी, रमतरोई, सुथनी, पानी, सनई, पाँकी, फीली वगैरह।

भोजपुरी के स्त्रीवाची प्रत्ययन में इया, आइन, इन, आनी, इनी वगैरह प्रमुख बा, जइसे

इया-पुरवइया, खटिया, रहतिया, सुतपुतिया, मदुइया, थरिया, डेहरिया, बछिया, बिछमतिया, डिबिआ वगैरह।

आइन- गुरुआइन, पंडिताइन, ललाइन, ठकुराइन, सहुआइन वगैरह।

इन-लोहइन, चमइन, कहारिन, रजपुतिन, दुसाधिन, नटुइन वगैरह।

आनी-नोकरानी, जेठानी, देवरानी वगैरह।

इनी-समधिनी, गोतिनी, कुरमिनी, मलकिनी, दोस्तिनी वगैरह।

भोजपुरी में 'इया' स्त्रीवाची प्रत्यय के उच्चारण 'इआ' के रूप में भी प्रचलित बा।

एह तरह से भोजपुरी लिंग परिवर्तन के जवन नियम परम्परा से प्रचलित बा, ओकरा से ई साफ उजागर होता कि लिंग परिवर्तन खातिर पुरुषवाची शब्दन में ही परिवर्तन होला। स्त्रीवाची शब्दन से पुरुष शब्द ना बनावल आय। भोजपुरी में कुछ शब्द मूल रूप से पुल्लिंग होले आ कुछ स्त्रीलिंग जवना में लिंग-परिवर्तन खातिर कवनो प्रत्यय के जरूरत ना होय, जइसे-नर-मादा, मरद-औरत/मेहरारू, बाप-मतारी/ माई पति-पत्नी, भाई-बहिन वगैरह। कुछ पुल्लिंग शब्दन में स्त्री वाची प्रत्यय ई, इया, आइन, इन, इनी वगैरह लगा के स्त्रीलिंग शब्द बनावे के प्रचलन लोक-व्यवहार में बा।

अभ्यास प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'जइधी' शब्द के पुल्लिंग शब्द का होई।

(क) जीजा (ख) जीजी

(ग) जाउत (घ) आजी

2. 'बाघ' शब्द के स्त्रीलिंग शब्द का होई।

(क) बघाइन (ख) बाघिन

(ग) बघनी (घ) बाघनी

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. लिंग' के परिभाषा देत ओकरा भेदन के परिचय दीं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. लिंग आ ओकरा भेदन के उदाहरण सहित परिचय देत भोजपुरी के लिंग सूचक प्रत्ययन के बारे में बताईं।

अध्याय 13

वाच्य

संस्कृत में वाच्य के 'प्रयोग' कहल जाला। प्रयोग के मतलब क्रिया के रूपान्तरित प्रयोग से बा। वाक्य में प्रयुक्त लिंग, वचन, पुरुष के अनुसार क्रिया बदलत रहेले। क्रिया के रूपांतर में कबहूँ कर्त्ता, कबहूँ कर्म त कबहूँ भाव प्रधान हो जाला। एह से वाक्य में क्रिया के रूपांतरित प्रयोग के तीन स्थिति मानल गइल बा-1. कर्तरिप्रयोग (कर्त्ता के अनुसार) 2. कर्मणि प्रयोग (कर्म के अनुसार) 3. भाव प्रयोग (भाव के अनुसार)। वाच्य क्रिया के ऊ रूपांतरित प्रयोग बोधे होला जवना से एह बात के भाव प्रकट होला कि वाक्य में कर्त्ता, कर्म भा भाव में से कवना के प्रधानता बा। कहे के मतलब बा कि क्रिया के लिंग, वचन, पुरुष में बदलाव के कवन प्रधान बा-कर्त्ता, कर्म भा दूनों में से कवनो ना। दोसरा तरह से कहल जा सकेला कि 'वाक्य में कर्त्ता, कर्म भा भाव के प्रधानता के बोध करावे वाला भाव के वाच्य कहल जाला'। जइसे प्रयोग के तीन गो प्रकार कहल गइल बा ओइसहीं वाच्य के भी तीन रूप होला-1.कर्तृ (कर्तरि) वाच्य, 2. कर्म वाच्य, आ 3. भाववाच्य।

कर्तृवाच्य- जवना वाक्य में कर्त्ता के प्रधानता होखे ओकरा के कर्तृवाच्य कहल जाला। अर्थात् कर्तृवाच्य वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन आ पुरुष में रूपांतर कर्त्ता के अनुसार होखेला एहसे ओकरा के कर्तृवाच्य कहल जाला। जइसे-'सर क्लास में व्याकरण पढ़ावत बाड़न', 'मैडम

क्लास में ग्रामर पढ़ावत बाड़ी', 'बाबूजी खाना खात बाड़न', 'माई खाना बनावत बाड़ी'। एह वाक्यन में क्रिया के लिंग, वचन भा पुरुष में बदलाव कर्त्ता के अनुसार हो रहल बा एह से इ सब कर्तृवाच्य के वाक्य हवे स।

कर्मवाच्य-जवना वाक्य में कर्म के प्रधानता होखे ओकरा के कर्मवाच्य कहल जाला। अर्थात् कर्मवाच्य वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन आ पुरुष में बदलाव कर्म के लिंग, वचन आ पुरुष के अनुसार होखेला। एह से ओकरा के कर्मवाच्य कहल जाला। जइसे-'सर के द्वारा व्याकरण पढ़ावल जाला', 'मैडम के द्वारा व्याकरण पढ़ावल जाला', 'बाबूजी द्वारा खाना बनावे के सामान खरीदल जाला', 'माई के द्वारा खाना बनावल जाला' एह सब वाक्यन में क्रिया के रूप कर्त्ता के अनुसार ना होके कर्म के अनुसार भइल बा, एह से इ सब कर्मवाच्य के वाक्य बाड़े स।

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में रूपांतर करे खातिर कर्त्ता के करणकारक रूप में लिखल जाला आऊर क्रिया के कृदंतीय रूप में 'अल', 'ला', 'जाला', 'आय', 'आव' जोड़ दिहल जाला।

ऊपर के वाक्यन में 'सर के द्वारा', 'मैडम के द्वारा', 'बाबूजी के द्वारा' , 'माई के द्वारा' में कर्त्ता के करण बना दिहल गइल बा आ क्रिया में 'वल' के साथ 'जाला' जोड़ दिहल गइल बा। अइसहीं देखल जाय-'माई से खाना न बनावल जाई', 'सीता से गीत ना गवाई', 'हमरा से खाइल ना जाई'।

भाववाच्य- जवना वाक्य में भाव के प्रधानता होला ओकरा के भाववाच्य कहल जाला। भाववाच्य वाक्य में क्रिया के रूपांतर ना त कर्त्ता

के अनुसार होखेला ना क्रिया के अनुसार बल्कि भाव के अनुसार होखेला। एह से अइसन वाक्य के भाववाच्य कहल जाला। एह में क्रिया हमेश में रहेले। जइसे-'हमरा से बइठल नइखे जात', 'गुरुजी से व्याकरण पढ़ावे के काम नइखे हो पावत'। ए वाक्यन में ना त कर्त्ता के अनुसार क्रिया बा। एकरा साथे इहो बात ख्याल रखे के चाही कि भाववाच्य में क्रिया बा ना कर्म के आनुसार बल्कि भाव के अनुसार क्रिया हमेशा संयुक्त आ भूतकालिक रूप में रहेला।

तीनों में अंतर करे के मोट तरीका इ बा कि कर्तृवाच्य के कर्त्ता में आऊर कर्मवाच्य के कर्म में क्रम से 'ने' भा 'को' चिन्ह ना लागेला।

बोध प्रश्न

1. खाली जगह के सही विकल्प से भरीं-

(कर्तृवाच्य, प्रयोग, वाच्य, कर्मवाच्य, भाव)

(क) संस्कृत में वाच्य के.....कहल जाला।

(ख) 'वाक्य में कर्त्ता, कर्म, भा भाव के प्रधानता के बोध करावे वाला भाव के ..... कहल जाला।

(ग) जवना वाक्य में कर्त्ता के प्रधानता होवे ओकरा के ..... कहल जाला।

(घ) जवना वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन आ पुरुष में बदलाव कर्म के लिंग, वचन आ पुरुष के अनुसार होवेला एह से ओकरा के .... कहल जाला।

(ङ) भाववाचक वाक्य में क्रिया के रूपांतर ना त कर्त्ता के अनुसार होखेला ना क्रिया के अनुसार बल्कि ..... के अनुसार होखेला।

2. नीचे दिहल परिभाषन के मिलान करीं।

(क) कर्तृवाच्य(i) वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन आ पुरुष में बदलाव भाव के अनुसार होला।

(ख) कर्मवाच्य (ii) वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन आ पुरुष में बदलाव कर्त्ता के अनुसार होला।

(ग) भाववाच्य (iii) वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन आ पुरुष में बदलाव कर्म के अनुसार होला।

3. नपल-तुलल शब्द में उत्तर लिखीं।

1. वाच्य केकरा के कहल जाला?
2. कर्तृवाच्य आ कर्मवाच्य में उदाहरण का सँगे अंतर बतलाईं।
3. वाच्य के बदलल जाय-दादी कथा कहत बाड़ी, सोहन रोटी खात बाड़न, हम घरे जात बानी।

अध्याय 14

समास

'दू भा दू से अधिक शब्द भा पद जब आपन-आपन विभक्ति छोड़ के एक दूसरा से मिल जाला स तब ओहनी के मिलला से जे विकार पैदा होला ओह बिकारी शब्द के समास कहल जाला'। जइसे-'खरपतवार', 'प्रतिदिन', 'राजपुरूख', 'शोकाकुल', 'बेआकुल', 'तिरमुहानी', 'बेलुरी', 'बेसरम'। ऊपर लिखल उदाहरण में 'खर' आ 'पतवार', 'प्रति' आ 'दिन', 'राजा' आ 'पुरूख', शोक' आ 'आकुल', 'वे' आ आकुल', 'तीन' आ 'मुहानी', 'बे' आ 'लुर', 'बे' आ 'सरम' आपन-आपन विभक्ति छोड़ के मिलल बाड़े स। एह तरह से समास के विशेषता बा-

1. समास में कम से कम दू शब्द के मेल होला,
2. शब्दन के मेल से जे बिकारी पद बनेला ओकरा के सामासिक पद कहल जाला।
3. मेल के बाद शब्द आपन-आपन आउर अलग-अलग अर्थ छोड़ के कवनो दोसर अर्थ के बोध करावे लागेले सन।
4. समास में आइल शब्दन के विभक्ति के लोप हो जाला।
5. सामासिक पद के थोड़े भाव अलग-अलग करे भा विश्लेषित करे के क्रिया के समास-बिग्रह कहल जाला।

समास के रूप

समास में दू भा दू से अधिक शब्द भा पद मिलेलेसन, जवना में कवनो दुइये गो पद प्रमुख होले स। ओहनी में कबहूँ पहिलका पद प्रमुख हो जाला, कबहूँ दूसरका पद, कबहूँ दूनों पद प्रमुख हो जाले स त कबहूँ अइसनो होला कि दूनों पद गौण हो जाले स आऊर ओहनी के जगह पर कवनो तीसर पद प्रधान हो जाला। पद प्रमुखता के ई चार स्थिति के अनुसार समास के रूप निर्धारित होला। एह तरीका से समास के मुख्य रूप से चार गो भेद होला।

1. अव्ययीभाव समास, 2. तत्पुरुष समास, 3. द्वन्द्व समास, आ 4. बहुब्रीही समास।

अव्यीभाव समास

जवना सामासिक पद के पहिलका पद प्रधान होला आउर ऊ शब्द उपसर्ग जाति के कवनो अव्यय होला ओकरा के अव्ययीभाव समास कहल जाला। एकर विशेषता बा-

1. अव्यीभाव समास के पहिला पद प्रधान होला, 2. पहिला पद कवनो उपसर्ग जाति के अव्यय होला, 3. पहिला पद के सामान्यत: कवनो अर्थ ना होला बाकिर ऊ दूसरका शब्द के साथ लग के एगो खास अर्थ देबे लागेला, 4. आम तौर पर पूरा पद क्रिया विशेषण बन जाला। जइसे-प्रतिदिन, यथाशक्ति, आजन्म, आमरण में प्रति, यथा, आ, शब्द उपसर्ग जाति के अव्यय बाड़े स। एहनी के कवनो खास अर्थ नइखे बाकिर इ सब क्रम से 'दिन', 'शक्ति', 'जन्म', आउर 'मरण' से लग के खास अर्थ 'रोज-रोज', 'शक्तिभर', 'जन्म भर', 'मरण' तक के बोध करावत बाड़े स।

तत्पुरुष समास

जवना सामासिक पद के दूसरा भा अंतिम पद प्रधान होखे ओकरा के तत्पुरुष समास कहल जाला। एकर विशेषता बा-

1. तत्पुरुष समास में दूसरा पद प्रधान होला।

2. पहिला पद समान्यत: विशेषण आ दूसरा पद विशेष्य होला भा बन जाला।

3. दूनों पद के बीच जे कारक विभक्ति होला ओकर लोप हो जाला।

कारकीय (कर्त्ता आउर संबोधन छोड़ के) विभक्ति के अस्तित्व के कारण एकर एगो नाम कारकीय समास भी हवे। कारकीय चिह्न के अनुसार भी एकर छव गो भेद कइल गइल बा।

परिभाषा आ उदाहरण समेत ऊ भेद बाड़े स-

1. कर्म तत्पुरुष भा तत्पुरुष द्वितीया-जवना तत्पुरुष समास के **पहिलका पद कर्म** कारक के विभक्ति **'के' भा 'को' से युक्त होला ओकरा के कर्म** तत्पपुरुष भा तत्पुरुष द्वितीय कहल जाला। जइसे-स्वर्गप्राप्त (स्वर्ग के प्राप्त), शरणागत (शरण के खातिर आइल)

2. करण तत्पुरुष भा तत्पुरुष द्वितीय- जवना तत्पुरुष समास के पहिलका पद करण कारक के विभक्ति 'से' से युक्त होला, ओकरा के करण तत्पुरुष भा तत्पुरुष तृतीया कहल जाला। जइसे- शोकाकुल (शोक से बेआकुल), अकालपीड़ित (अकाल से पीड़ित)।

3. संप्रदान तत्पुरुष भा चतुर्थी-जवना तत्पुरुष समास के पहिला पद संप्रदान कारक के विभक्ति के, के खातिर, 'खातिर' से युक्त होला ओकरा के संप्रदान तत्पुरुष भा तत्पुरुष चतुर्थी कहल जाला। जैसे-राहखंर्चा (राह खातिर खर्चा), देशभगति (देश के खातिर भगति)

4. अपादान तत्पुरुष भा तत्पुरुष पंचमी-जवना तत्पुरुष समास के पहिलका पद अपादान भा पंचमी कारक विभक्ति से युक्त होला ओकरा के अपादान तत्पुरुष भा तत्पुरुष पंचमी कहल जाला। जइसे-'करमहीन', (करम से हीन), 'करमजरू' (करम से जरल), 'धनहीन' (धन से हीन), 'रिनमुक्त' (रिन से मुक्त), 'देशनिकाला' (देश से निकाला)।

5. संबंध तत्पुरुष भा तत्पुरुष षष्ठी-जवना तत्पुरुष समास के पहिला पद संबंध तत्पुरुष भा तत्पुरुष पंचमी कारक विभक्ति 'का', 'के', 'की' से युक्त होला ओकरा के संबंध तत्पुरुष भा तत्पुरुष पंचमी कहल जाला। जइसे- गंगाजल' (गंगा के जल), 'घोड़दऊर' (घोड़ा के दौड़), 'इस्त्रीधन' (इस्त्री के धन)।

6. अधिकरण तत्पुरुष भा तत्पुरुष सप्तमी समास-जवना समास के पहिला पद अधिकरण कारक विभक्ति 'में', 'पर' से युक्त होला ओकरा के अधिकरण तत्पुरुष भा तत्पुरुष षष्ठी समास कहल जाला। जैसे-'तेलपक' (तेल में पकावल), 'खटपरू' (खटिया पर परल)।

एकरा अलावे भी तत्पुरुष समास के कर्मधारय, नञ, द्विगु कर्मधारय मध्यमपदलोपी, उपपद, अलुक, मयूरव्यंसकादि अनेक भेद होला। एमे महत्वपूर्ण बा-

कर्मधारय-कर्मधारय समास ऊ तत्पुरुष समास ह जवना में कम से कम एक पद विशेषण होला आऊर दूनों पद के बीच विशेषण-विशेष्य के संबंध होला। जइसे-'करमसाढ़' (साँढ़ लेखा करम), 'भलमानुख' (भलामानुख), 'पीताम्बर' (पीत अंबर-पीला वस्त्र), 'शीतोष्ण' (शीत-उष्ण), 'कुमारी' (क्वारी लड़की)।

नञ् समास-ऊ तत्पुरूष समास जवना के प्रथम पद नकार सूचक होला ओकरा के नञ् समास कहल जाला। जइसे-अनपढ़ (बे पढ़ल लिखल), अनगिनत (गिनल ना कइल जा सके)।

द्विगु समास-ऊ तत्पुरुष समास जवना के प्रथम पद संख्यासूचक विशेषण होला ओकरा के द्विगु समास कहल जाला। जइसे-'नवरतन' (नव गो रतन), 'चउकोर' (चार कोर वाला), 'चौराहा' (चार राह के समूह), 'त्रिभुज' (तीन भुजा वाला)।

द्वंद्व समास

ऊ समास जवना के दूनो पद प्रधान होला ओकरा के द्वंद्व समास कहल जाला। जइसे-'माईबाप' (माई अउर बाबूजी), 'सीताराम' (सीता अउरी राम), 'पाप-पुन' (पाप आ पुन), दयाधरम' (दया अउरी धरम)

बहुब्रीहि समास

ऊ समास जवना के ना त पहिला पद प्रधान होला ना दूसरा आ दूनों मिल के कवनों तीसर अर्थ देबे लागेले स तब ओकरा के बहुब्रीहि समास कहल जाला। जइसे-'लरकोरी' (लइका बा जेकरा कोरा में),

'पीताम्बर' (पीला बा वस्त्र ऊ अर्थात् कृष्ण), 'वीणापाणि' (वीणा बा जेकरा हाथ में ऊ अर्थात् सरस्वती)।

बोध प्रश्न

1. खाली जगह के सही विकल्प से भरीं।
(सामासिक पद, समास-विग्रह, अव्यीभाव समास, द्वंद्व समास, बहुब्रीहि समास)

(क) शब्दन के मेल से जे बिकारी पद बनेला ओकरा के ..... कहल जाला।

(ख) सामासिक पद के तूड़े भा अलग-अलग करे भा विश्लेषित करे के क्रिया के ..... कहल जाला।

(ग) जवना सामासिक पद के पहिलका पद प्रधान होला आउर ऊ शब्द उपसर्ग जाति के कवनो अव्यय होला त ओकरा के ..... कहल जाला।

(घ) ऊ समास जवना के दूनों पद प्रधान होला ओकरा के ..... कहल जाला।

(ङ) समास जब मूल अर्थ छोड़ के कवनो तीसर अर्थ देबे लागे तब ओकरा के ..... कहल जाला।

2. सुमेलित कइल जाए

अ	ब
(क) अपादान तत्पुरुष भा तत्पुरुष पंचमी	लरकोरी (लइका बा जेकरा कोरा में)
(ख) संबंध तत्पुरुष भा तत्पुरुष पंचमी	करमसाढ़ (साँढ़ लेखा करम)

(ग) अधिकरण तत्पुरुष भा तत्पुरुष षष्ठी समास	'चउकोर' (चार कोर वाला)
(घ) कर्मधारय	'घोड़दऊर' (घोड़ा के दौड़)
(ङ) नञ् समास	दयाधरम (दया अउरी धरम)
(च) द्विगु समास	खटपरू (खटिया पर परल)
(छ) द्वंद्व समास	अनपढ़ (बे पढ़ल लिखल)
(ज) बहुब्रीह समास	'करमजरू' (करम से जरल)

3. नपल-तुलल शब्द में उत्तर दीं।

(क) समास केकरा के कहल जाला।

(ख) संधि समास में का अंतर बा।

(ग) समास के कैगो आ कवन-कवन रूप बा। उदाहरण दीं।

(घ) समास के का काम ह।

(ङ) कर्मधारय समास आ द्विगु समास में का अंतर बा। उदाहरण दीं।

(च) कर्मधारय समास आ बहुब्रीहि समास में का अंतर बा। उदाहरण समेत समुझाईं।

(छ) नीचे लिखल शब्दन के बिग्रह करीं -करमजरू, करमकूट, खटपरू, खड़ेसरी, स्वर्गवासी, लरकोरी, बरजोरी।

क्रियाभ्यास

(1) समास के प्रचलित अप्रचलित रूप भेदन के संग्रह क के एगो आरेख खींचीं।